लिंगाष्टकं

1. ब्रह्म मुरारि सुरार्चित लिंगं
   निर्मल भासित शोभित लिंगं
   जन्मज दुःख विनाशक लिंगं
   तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं

2. देव मुनि प्रवरार्चित लिंगं
   काम दहन करुणाकर लिंगं
   रावण दर्प विनाशक लिंगं
   तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं

3. सर्व सुगंध सुलेपित लिंगं
   बुद्धि विवर्धन कारण लिंगं
   सिद्ध सुरासुर वंदित लिंगं
   तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं

4. कनक महामणि भूषित लिंगं
   फणिपति वेष्टित शोभित लिंगं
   दक्ष सुयज्ञ विनाशक लिंगं
   तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं

5. कुंकुम चंदन लेपित लिंगं
   पंकज हार सुशोभित लिंगं
   संचित पाप विनाशक लिंगं
   तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं

6. देव गणार्चित सेवित लिंगं
भावैर्भक्तिभिरेवच लिंगं
दिनकर कोटि प्रभाकर लिंगं
तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं

7. अष्ट दळोपरिवेष्टित लिंगं
सर्व समुद्भव कारण लिंगं
अष्ट दरिद्र विनाशक लिंगं
तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं

8. सुरगुरु सुरवर पूजित लिंगं
सुरवन पुष्प सदार्चित लिंगं
परात्परं परमात्मक लिंगं
तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं

9. लिंगाष्टकमिदं पुण्यं
यः पठेच्छिव सन्निधौ
शिवलोकमवाप्नोति
शिवेन सहमोदते